

अलवर जिले में कृषि के बदलते प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. योगेन्द्र सैनी

सह आचार्य (भूगोल)

सम्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर (राज.)

राजेन्द्र प्रसाद मीना

शोधार्थी, भूगोल विभाग

सम्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर (राज.)

प्रस्तावना

अलवर जिले में फसलों का उत्पादन अधिकांश सिंचाई द्वारा प्राप्त होता है, जिसमें रबी की अधिकांश फसलें सिंचाई द्वारा ही उत्पादित होती हैं। सिंचाई क्षेत्र फसलों की प्रकृति एवं प्राप्त जल के अनुसार बदलता रहा है, जिसमें एक प्रमुख कारण भू-जल की प्राप्ति भी है। अलवर जिले में शुष्क फसली क्षेत्र में वृद्धि हुई है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में कृषि फसलों के बदलते प्रतिरूप पर अध्ययन करने का प्रयास है।

शोध के उद्देश्य – शोध कार्य के उद्देश्य इस प्रकार रहे हैं:—

1. कृषि फसलों की प्रवृत्ति का अभिज्ञान।
2. कृषि फसल क्रम की जानकारी करना।
3. बदलते फसली क्षेत्र का पता करना।

परिकल्पनाएं— इस शोध कार्य के लिए निम्न परिकल्पनाएं रही हैं—

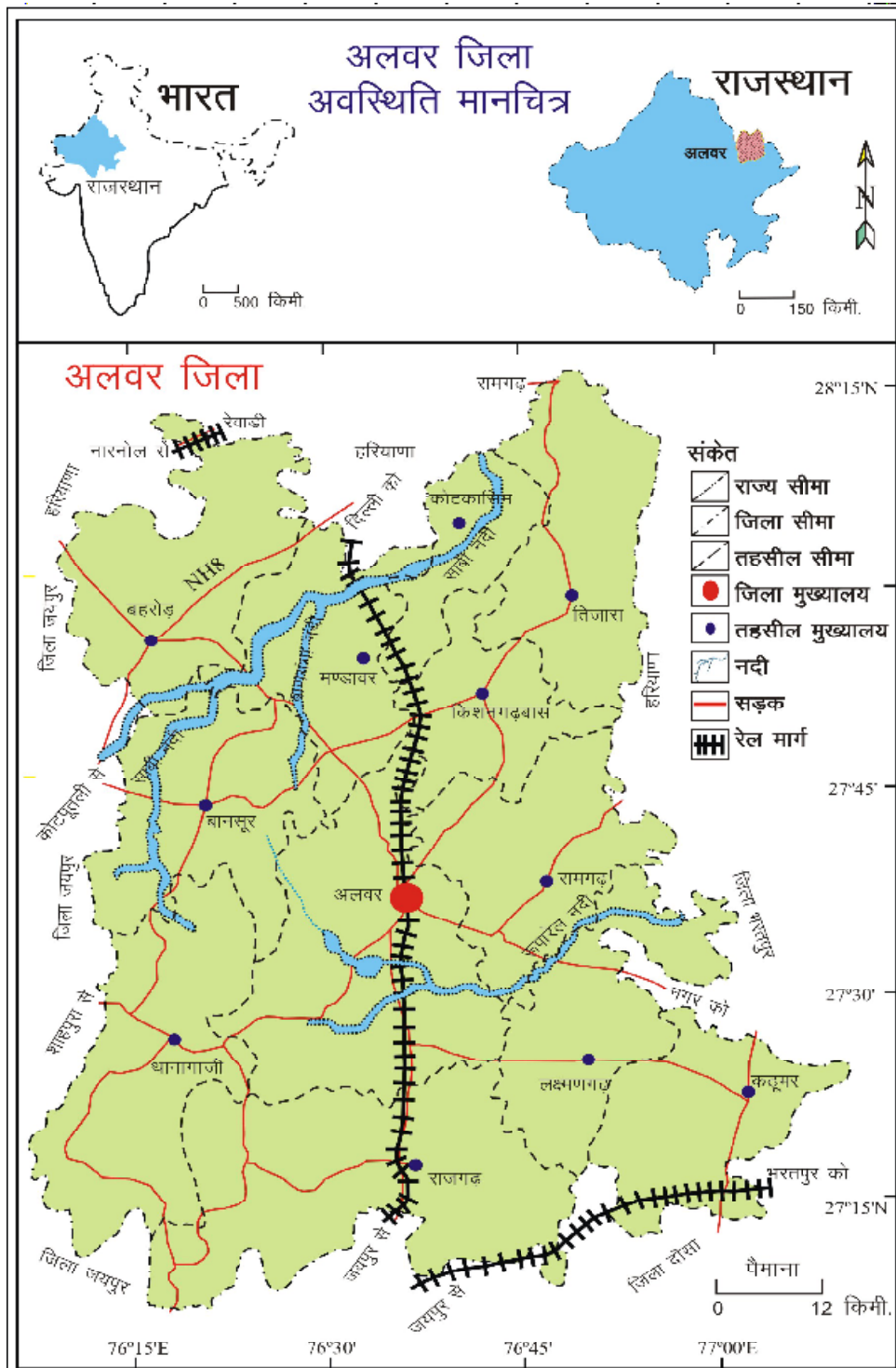
1. कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई है।
2. फसली क्षेत्र में बदलाव आवश्यक होती है।
3. फसलें जल द्वारा प्रभावित होती हैं।

अध्ययन क्षेत्र

अलवर जिले की भौगोलिक स्थिति 27°41' से 28°4' उत्तरी और 76°07' से 77°13' पूर्वी देशान्तर के मध्य हैं, जिले का उत्तर-दक्षिणी विस्तार 137 किलोमीटर जबकि पूर्व-पश्चिम दिशा में 110 किलोमीटर है अर्थात् इसकी लम्बाई, चौड़ाई से अधिक है। जिले की उत्तरी-पूर्वी सीमा हरियाणा राज्य के मेवात व

महेन्द्रगढ़ जिले से तथा पूर्वी व दक्षिणी पूर्वी सीमा राजस्थान के भरतपुर जिले से लगती हैं, जबकि पश्चिम में जयपुर व दक्षिण में दौसा जिले से सीमा लगती हैं। (मानचित्र- 1)

मानचित्र-1



शोध विधि एवं आंकड़ों के स्रोत

प्रस्तुत शोध कार्य की पूर्णता के लिए द्वितीय आंकड़ों के आधार पर तालिका प्रतिशत, कमी व वृद्धि का अन्तर ज्ञात कर अध्ययन को क्रमता दी गई है तथा आरेख द्वारा अध्ययन स्पष्ट करने का प्रयास रहा है। इस कार्य के लिए आंकड़ों का एकत्रीकरण जिला कार्यालय, अलवर तथा जनगणना निदेशालय, जयपुर एवं आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय जयपुर द्वारा प्रस्तुत किये है।

कृषि प्रतिरूप

अलवर जिले की रबी की फसल पूर्णतया सिंचाई पर ही निर्भर रही है। रबी के मौसम में खाद्यान्न एवं तिलहन व दलहन आदि फसलों में खाद्यान्न फसलों की प्रधानता है लेकिन वर्तमान में धीरे-धीरे कृषि में व्यवसायीकरण होने से सिंचित क्षेत्रफल में खाद्यान्न फसलों की क्षेत्रफल कम होता जा रहा है।

सिंचाई की सुविधा सम्पूर्ण कृषि क्षेत्रफल को उपलब्ध न होने कारण सिंचाई सुविधा वाले सीमित काश्त क्षेत्रफल में ही रबी की फसलों एवं खरीफ की व्यावसायिक फसलें पैदा की जाती है।

तालिका-1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र सरसों फसल के अन्तर्गत है जिसका प्रमुख कारण यह है कि सरसों प्रमुख शुष्क फसल है।

तालिका -1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2011 में कुल सिंचित क्षेत्र 463697 हैक्टेयर था जो वर्ष 2021 में घटकर 345372 हैक्टेयर रहा गया है विगत 20 वर्षों में सिंचाई क्षेत्र में कमी हुई है। यह तालिका-1 द्वारा स्पष्ट है। कुल कमी 27.24 की हुई है।

तालिका संख्या-1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में द्वितीय सिंचाई गेहूँ की फसल में हुई है, जो कि वर्ष 2011 में 41.83 प्रतिशत क्षेत्र पर हुई। जबकि वर्ष 2021 में घटकर 38.72 प्रतिशत रह गई है एवं 20 वर्षों में 3.11 प्रतिशत की कमी हुई है। इसका प्रमुख कारण है कि अध्ययन क्षेत्र में गेहूँकी फसल में सिंचाई कम हुई है और गेहूँ की फसल कम पैदा की जाने लगी है।

तालिका-1

अलवर जिला

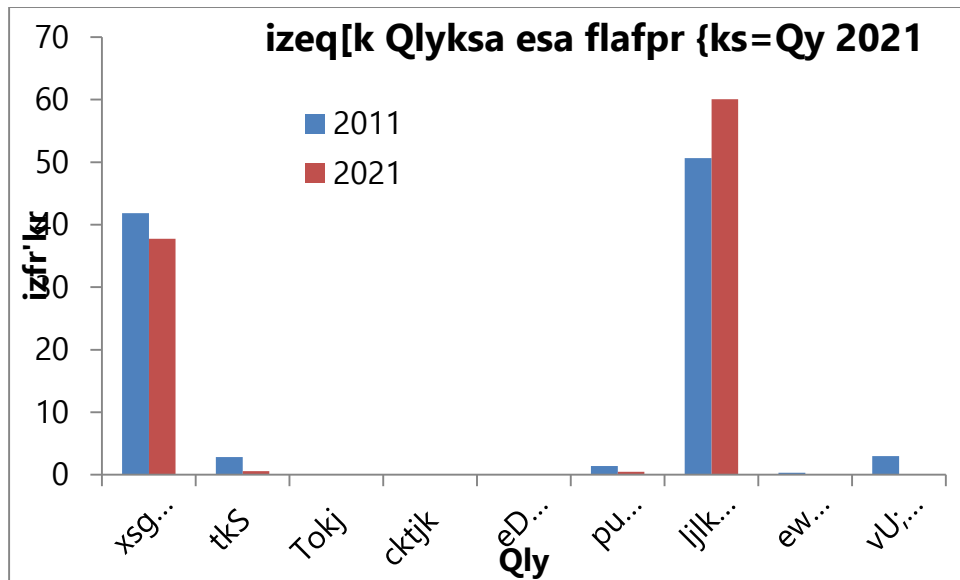
प्रमुख फसलों में सिंचित क्षेत्रफल 2021

क्र. स.	फसले	वर्ष 2011	प्रतिशत	वर्ष 2021	प्रतिशत	परिवर्तन .६
1	गेहूँ	193943	41 ^७ 83	133838	37 ^७ 72	.3 ^७ 11
2	जौ	12978	2 ^७ 80	2040	0 ^७ 59	.2 ^७ 21
3	ज्वार	40	0 ^७ 008	25	0 ^७ 007	0 ^७ 001
4	बाजरा	162	0 ^७ 03	2	0 ^७ 00	0 ^७ 002
5	मक्का	10	0 ^७ 002	2	0 ^७ 00	0 ^७ 002
6	चना एवं दाल	6541	1 ^७ 41	1578	0 ^७ 46	.0 ^७ 95
7	सरसों एवं राई	234887	50 ^७ 66	207512	60 ^७ 05	9 ^७ 39
8	मूंगफली	1433	0 ^७ 30	350	0 ^७ 10	. ^७ 20
9	अन्य फसले	13703	2 ^७ 96	225	0 ^७ 07	.2 ^७ 89
	कुल सिंचित क्षेत्र	463697	100	345572	100	.27 ^७ 24

स्रोत: आर्थिक एवं सांख्यिकीय रूपरेखा 2012-21

फसलों के अनुसार सिंचित क्षेत्रफल अध्ययन क्षेत्र अलवर जिले की प्रमुख फसलों बदलते प्रतिरूप का अध्ययन एवं विवरण इस प्रकार से है:-

आरेख -1



- खाद्य फसलें:-** अध्ययन क्षेत्र में पैदा की जाने वाली अनाज फसलों में खरीफ मौसम में ज्वार, बाजरा, मक्का, व रबी के मौसम में गेहूँ और जौ की पैदावार होती है। जिसमें गेहूँ और जौ की फसल के लिए सबसे अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसलिए सबसे अधिक सिंचित क्षेत्र में खाद्यान्न फसलों की होती है इन फसलों कुल सिंचित क्षेत्र वर्ष 2011 में 95.63 प्रतिशत क्षेत्र पर था जो कि वर्ष 2021 में बढ़कर 99.47 प्रतिशत हुआ है। परन्तु 20 वर्षों में कुल सिंचित क्षेत्र में 27.24 प्रतिशत की कमी हुई है। इसका प्रमुख कारण फसलों का बदलता प्रतिरूप है।
- दलहन:-** जिले में खरीफ दलहन फसल में मूंग, मोठ, उड़द एवं अरहर व रबी की फसल में चना एवं मटर पैदा किया जाता है जिसमें सिंचित क्षेत्र में कुल दालों में 0.46 प्रतिशत चना ही पैदा किया जाता है। चने की फसल के लिए गेहूँ व जौ की फसल की तुलना में कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। दूसरा चने की फसल व्यावसायिक फसल होने के कारण अधिक कीमत प्राप्त होती है। इसका कारण व्यावसायिक फसल चने का उत्पादन बढ़त जा रहा है। तालिका-1 एवं आरेख-1 से स्पष्ट है कि दलहन फसलों को कुल सिंचित क्षेत्र के वर्ष 2011 में 1.41 प्रतिशत पैदा की गई है जो वर्ष 2021 में घटकर 0.46 रह गयी। अतः स्पष्ट है कि सिंचित क्षेत्र में दाल फसलों में 20 वर्षों में 0.95 प्रतिशत की कमी हुई है।
- 3. तिलहन फसले :-**

अध्ययन क्षेत्र में पिछले 20 वर्षों के आंकड़ों से स्पष्ट है कि तिलहन उत्पादन क्षेत्र में लगातार वृद्धि होती जा रही है। तिलहन व्यापारिक फसल होने के कारण एवं कृषि आदानों के उपयोग से प्रति हैक्टेयर

अधिक उपज प्राप्त होने से अधिक उत्पादित होने लगी। इस कारण तिलहन उत्पादन क्षेत्र एवं सिंचित क्षेत्रफल में तिलहनों का क्षेत्रफल बढ़ता ही जा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र में तिलहन फसलों में सबसे अधिक सरसों उत्पादित की जाती है। तालिका-1 एवं आरेख-1 से स्पष्ट है कि तिलहन फसलों में सरसों के अन्तर्गत सिंचित क्षेत्र के वर्ष 2011 में 50.66 प्रतिशत क्षेत्र पर पैदा की गई। वर्ष 2021 में 60.05 प्रतिशत क्षेत्र में सरसों फसले पैदा की गई। अतः स्पष्ट है कि 20 वर्षों में 9.35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिसका कारण सरसों का कम सिंचाई में पैदा होना रहा है।

अतः अलवर जिले के बदलते कृषि प्रतिरूप में प्रमुख फसलों की भूमिका प्रमुख प्रभावी है। परन्तु इस के लिए सिंचित क्षेत्र एवं कृषक की अनुभव कृषि प्रणाली भी अधिक सहयोगी रही है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी आर.सी., सिंह बी.एन. (2002) : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद
2. सिंह जसवीर, (1976): एन एग्रीकल्चर ज्योग्राफी ऑफ हरियाणा, विशाल बब्लिकेशन हरियाणा।
3. सिंह, बी.एसी., सिंह, एस.जी. (1974), शस्य सम्मिश्रण विधि अध्ययन में एक पुनर्विलोकन उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 10 संख्या 1-2
4. सिंह ब्रज भूषण (1966) : कृषि भूगोल ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर
5. कपूर सुदर्शन कुमार, (1974) : भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा 2012, 2021